हलषष्ठी व्रत कथा व पूजा विधि

https://pdffile.co.in/

|| हलषष्ठी / लाठी छठ व्रत कथा ||

एक ग्वालिन दूध दही बेचकर अपना जीवन व्यतीत कर रही थी। एक बार वह गर्भवती और दूध बेचने जा रही थी तभी रास्ते में उसे प्रसव पीड़ा होने लगी। इस पर वह एक पेड़ के नीचे बैठ गई और वहीं पर एक पुत्र को जन्म दिया। ग्वालिन को दूध खराब होने की चिंता थी इसलिए वह अपने पुत्र को पेड़ के नीचे सुलाकर पास के गांव में दूध बेचने के लिए चली गई। उस दिन हर छठ व्रत था और सभी को भैंस का दूध चाहिए था लेकिन ग्वालिन ने गाय के दूध को भैंस का बताकर सबको दूध बेच दिया। इससे छठ माता को क्रोध आया और उन्होंने उसके बेटे के प्राण हर लिए। ग्वालिन जब लौटकर आई तो रोने लगी और अपनी गलती का अहसास किया। इसके बाद सभी के सामने अपना गुनाह स्वीकार पैर

https://pdffile.co.in/

पकड़कर माफी मांगी। इसके बाद हर छठ माता प्रसन्न हो गई और उसके पुत्र को जीवित कर दिया। इस वजह से ही इस दिन पुत्र की लंबी उम्र हेतु हर छठ का व्रत व पूजन होता है।

****

https://pdffile.co.in/

हलषष्ठी पूजा विधि

❖हलषष्ठी के दिन सुबह से नहा धोकर साफ कपड़े पहनकर गोबर से भूमि को अच्छे से लीप - पोत लें।

❖अब पूजा स्थल के निकट एक कृतिम छोटे से जलशय (तालाब) का निर्माण करें।

❖इस तालाब के आसपास झरबेरी और पलाश को लगा दें।

❖तदोपरान्त पूजा में चना, जौ, गेंहू, धान, मक्का और मक्का से पूजा करें।

❖तत्पश्चात हलछठ की कथा सुनाई जाती है, जिसके प्रभाव से संतान की आयु में वृद्धि होती है।

https://pdffile.co.in/

॥ जय श्री छठ मईया ॥

Created by - https://pdffile.co.in/

https://pdffile.co.in/